Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

स्वामी दयानंद सरस्वती के वैचारिक आंदोलन का भारतीय शिक्षा नीति पर प्रभाव

हीरा लाल अहीर* डॉ. राखी शर्मा **

* शोधार्थी (शिक्षाशास्त्र) विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) भारत
** सह-प्राध्यापक (शिक्षाशास्त्र) विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – स्वामी दयानंद सरस्वती वह महान संत थे जिन्होंने समाज में व्याप्त अंधविश्वास, रूढ़िवादिता और तमाम प्रकार के आडंबरों का डटकर विरोध किया। उन्होंने हमेशा ऐसे अमानवीय आचरण के विरुद्ध आवाज उठाई जो समाज के विकास में बाधक थे। स्वामी जी ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिलाने और हिन्दू धर्म के गौरव को पुन: स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके इन महान कार्यों के लिए भारतीय समाज सदैव उनका ऋणी रहेगा।

स्वामी दयानंद सरस्वती के शिक्षा संबंधी विचार और उनके द्वारा किए गए सामाजिक सुधार के प्रयासों का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है। उनके विचारों और कार्यों को समझने के लिए विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को समग्र रूप से शामिल करते हुए इस विषय पर गहराई से अध्ययन किया गया है।

शब्द कुंजी – स्वामी दयानंद सरस्वती, अज्ञानता, अंधविश्वास, रूढ़िवादिता।

प्रस्तावना – स्वामी दयानंद सरस्वती भारतीय समाज सुधार आंदोलन के प्रमुख पुरोधा थे, जिन्होंने समाज में व्याप्त अज्ञानता, अंधविश्वास और रूढ़िवादिता के विरुद्ध अपने जीवन को समर्पित किया। उनका जन्म सन् 1824 में गुजरात के टंकरा नामक स्थान पर हुआ था। बचपन में उनका नाम मूलशंकर था। स्वामी दयानंद का प्रारंभिक जीवन धार्मिक संस्कारों से परिपूर्ण था, और उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा संस्कृत भाषा में प्राप्त की।

स्वामी दयानंद ने स्वामी विरजानंद के सान्निध्य में वेदों और उपनिषदों का गहन अध्ययन किया। शिक्षा पूर्ण करने के उपरांत, अपने गुरु के आदेशानुसार उन्होंने समाज में व्याप्त अज्ञानता को दूर करने के लिए देशभर में भ्रमण किया। इसी यात्रा के दौरान उन्होंने अनुभव किया कि समाज रूढ़िवादिता और अंधविश्वास के कारण पतन की ओर बढ़ रहा है। इस स्थिति को सुधारने के लिए उन्होंने सन् 1875 में आर्य समाज की स्थापना की, जिसका उद्देश्य समाज में सत्य, धर्म और ज्ञान का प्रसार करना था। स्वामी दयानंद ने अपने विचारों को जन-जन तक पहुँचाने के लिए 'सत्यार्थ प्रकाश' नामक ग्रंथ की रचना की, जिसमें उन्होंने समाज को अज्ञानता से मुक्ति दिलाने के लिए सत्य, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और तर्क पर आधारित जीवन जीने का संदेश दिया। उनका योगदान भारतीय समाज में एक नई चेतना का संचार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

अध्ययन के उद्देश्य:

1. स्वामी दयानंद सरस्वती के पुनर्जागरण में योगदान का गहनता से अध्ययन करना।
2. सामाजिक कार्यों के माध्यम से मानव कल्याण के लिए किए गए प्रयासों का अध्ययन करना।
3. स्वामी दयानंद के जनकल्याणकारी कार्यों का समाज पर क्या असर पड़ा, इसका अध्ययन करना।
4. स्वामी दयानंद के विचारों का भारतीय समाज में जागरूकता और बदलाव के संदर्भ में अध्ययन करना।

शोध-प्रविधि – प्रस्तुत शोध पत्र ऐतिहासिक विश्लेषण एवं वर्णनात्मक दृष्टिकोण पर आधारित है। इसमें शोध सामग्री का संकलन प्रमुख ग्रंथों, पुस्तकों एवं विश्वसनीय स्रोतों से किया गया है। वस्तुत: यह शोध पत्र द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है, जिसमें विभिन्न स्रोतों का अध्ययन कर निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है।

स्वामी दयानंद सरस्वती ने भारतीय समाज में शिक्षा के महत्व को गहराई से समझा और अपने विचारों के माध्यम से शिक्षा को एक नई दिशा प्रदान की। उनके शिक्षा संबंधी विचारों का विस्तार से उल्लेख उनके प्रसिद्ध ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' के द्वितीय और तृतीय समुल्लास में मिलता है। स्वामी जी का मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल किताबी ज्ञान देना नहीं, बल्कि व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और आत्मिक विकास को सुनिश्चित करना है। उन्होंने शिक्षा को समाज सुधार का एक प्रभावी माध्यम बताया और इसे राष्ट्र निर्माण की महत्वपूर्ण कड़ी माना।

स्वामी दयानंद का मानना था कि व्यक्ति समाज की सबसे छोटी इकाई है। यदि व्यक्ति का समग्र विकास हो जाए, तो समाज का विकास स्वत: ही संभव है। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास शिक्षा के माध्यम से ही संभव है। इसलिए शिक्षा को हर व्यक्ति तक पहुँचाना आवश्यक है। उनके अनुसार, माता-पिता, शिक्षक और समाज का यह दायित्व है कि वे बच्चों को ज्ञान, अच्छे संस्कार और सद्गुण प्रदान करें ताकि वे समाज के लिए उपयोगी बन सकें।

स्वामी दयानंद ने शिक्षा को समाज और राज्य का महत्वपूर्ण दायित्व बताया। उन्होंने यह सुझाव दिया कि राज्य को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हर बालक को उचित शिक्षा मिले। उन्होंने अपने ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' में

उल्लेख किया कि माता-पिता को अपने बच्चों को पांच से आठ वर्ष की आयु के बीच विद्यालय अवश्य भेजना चाहिए। स्वामी जी ने इस बात पर बल दिया कि जो माता-पिता अपने बच्चों को विद्यालय नहीं भेजते, उन्हें दंडित किया जाना चाहिए ताकि शिक्षा का महत्व हर व्यक्ति समझे और समाज में निरक्षरता समाप्त हो सके।

स्वामी दयानंद ने शिक्षा को केवल ज्ञान अर्जन तक सीमित न रखते हुए इसे समाज सुधार का महत्वपूर्ण साधन माना। उन्होंने शिक्षा के माध्यम से समाज में व्याप्त अज्ञानता, अंधविश्वास और रूढ़िवादिता को समाप्त करने का प्रयास किया। उन्होंने शिक्षा को व्यक्ति के चरित्र निर्माण और नैतिक उत्थान का आधार माना। उनका विश्वास था कि शिक्षा व्यक्ति को आत्मनिर्भर, संस्कारवान और समाज के प्रति उत्तारदायी बनाती है।

स्वामी दयानंद ने बालक-बालिकाओं दोनों के लिए समान शिक्षा पर विशेष जोर दिया। उस समय समाज में स्त्रियों को शिक्षा से वंचित रखा जाता था, जिसे उन्होंने समाज के पतन का प्रमुख कारण बताया। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि शिक्षा का अधिकार हर व्यक्ति को समान रूप से मिलना चाहिए, चाहे वह पुरुष हो या स्त्री। स्वामी जी के अनुसार, जो लोग स्त्रियों को शिक्षा से वंचित रखते हैं, वे समाज के विकास में बाधा उत्पन्न करते हैं।

स्वामी दयानंद ने वैदिक काल के उदाहरण देते हुए बताया कि उस समय स्त्रियां शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी थीं। उन्होंने गार्गी, मैत्रेयी, सुलभा और कात्यायनी जैसी विदुषियों का उल्लेख किया, जिन्होंने ज्ञान के क्षेत्र में महान उपलब्धियां हासिल की थीं। स्वामी दयानंद का मानना था कि यदि स्त्री शिक्षित होगी, तो परिवार और समाज का विकास तेजी से होगा। उनके इन विचारों से प्रेरित होकर महात्मा मुंशीराम और लाला देवराज जैसे आर्य समाज के नेताओं ने कन्या पाठशालाओं की स्थापना की, जिससे स्त्री शिक्षा को बढ़ावा मिला।

स्वामी दयानंद ने शिक्षा के महत्व को समझते हुए आर्य समाज के 28 नियमों में आर्य विद्यालयों की स्थापना को विशेष स्थान दिया। उन्होंने इन विद्यालयों में वेदों और प्राचीन ग्रंथों के अध्ययन को अनिवार्य बनाया ताकि विद्यार्थियों को सत्य, धर्म और नैतिक मूल्यों की शिक्षा दी जा सके। इसके अतिरिक्त, स्वामी जी ने परोपकारिणी सभा के उद्देश्यों में अनाथ और निर्धन बच्चों की शिक्षा पर भी विशेष ध्यान देने का निर्देश दिया।

स्वामी दयानंद सरस्वती का शिक्षा दर्शन आज भी समाज के लिए प्रेरणादायक है। उनका मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल व्यक्ति को रोजगार दिलाना नहीं, बल्कि उसे ऐसा नागरिक बनाना है जो अपने कर्तव्यों को समझे और समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों का पालन करे। उनके विचार शिक्षा को व्यक्ति के समग्र विकास का आधार मानते हैं, जो आज के युग में भी अत्यंत प्रासंगिक है।

स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा प्रतिपादित शिक्षा संबंधी विचारों ने भारतीय समाज में जागरूकता और सुधार लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके प्रयासों से न केवल शिक्षा का प्रसार हुआ, बल्कि समाज में व्याप्त अज्ञानता, कुप्रथाओं और अन्याय के खिलाफ एक नई चेतना का संचार हुआ। उनकी शिक्षा नीति का उद्देश्य एक ऐसे समाज का निर्माण करना था, जो ज्ञान, नैतिकता और मानवता के मूल्यों पर आधारित हो।

निष्कर्ष – महर्षि दयानंद सरस्वती ने समाज को जागरूक करने के लिए शिक्षा को सबसे प्रभावी साधन माना। उन्होंने मंदिर निर्माण, विवाह, मृत्यु आदि अवसरों पर अनावश्यक खर्च को हतोत्साहित करते हुए उस धन को शिक्षा के प्रसार में लगाने का परामर्श दिया। उनका विश्वास था कि समाज में व्याप्त अज्ञानता, अंधविश्वास और रूढ़ियों का समाधान केवल शिक्षा के माध्यम से ही संभव है।

स्वामी दयानंद का मानना था कि शिक्षा व्यक्ति को सही-गलत का निर्णय करने की समझ प्रदान करती है। शिक्षा ही मनुष्य को अंधकार से प्रकाश की ओर, असत्य से सत्य की ओर, और मृत्यु से अमरत्व की ओर ले जाती है। ज्ञान ही वह साधन है जो मनुष्य को जीवन में सफल बनाकर उसे समाज के कल्याण के लिए प्रेरित करता है। स्वामी दयानंद के अनुसार, शिक्षा का स्वरूप ऐसा होना चाहिए जो समाज में सकारात्मक बदलाव लाए और मानवीय मूल्यों को बढ़ावा दे। उन्होंने अपनी रचना 'सत्यार्थ प्रकाश' में शिक्षा पद्धति का विस्तार से वर्णन करते हुए इस बात पर बल दिया कि शिक्षा का उद्देश्य केवल विद्या का अर्जन न होकर समाज में नैतिकता, सद्भावना और सेवा के संस्कार उत्पन्न करना भी होना चाहिए।

महर्षि दयानंद सरस्वती के शिक्षा संबंधी विचार आज भी समाज को प्रगति के मार्ग पर ले जाने के लिए प्रेरणादायक हैं। उनका शिक्षादर्शन व्यक्ति के समग्र विकास, समाज के सुधार और राष्ट्र निर्माण के लिए एक महत्वपूर्ण आधारशिला के रूप में सदैव स्मरणीय रहेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1. संपादक, पं. भगवद्दत्ता, सत्यार्थ प्रकाश, प्रथम संस्करण, सरस्वती भवन प्रकाशन, दिल्ली ,2012.
2. पराशर, संदीप, स्वामी दयानंद सरस्वती, प्रथम संस्करण, नेशनल बुक ट्रस्ट, दिल्ली ,2005 .
3. भाटिया, सुदर्शन, स्वामी दयानंद सरस्वती, प्रथम संस्करण, ज्ञान गंगा प्रकाशन, दिल्ली, 2004.
4. मित्तल, डॉ. सतीश चंद्र, भारत का सामाजिक आर्थिक इतिहास, प्रथम संस्करण ,प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली,2005.
5. दास, एम.एन., पुरी, बी.एन., चोपड़ा, पी.एन., भारत का सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक इतिहास (खंड 3), प्रथम संस्करण, सागर पब्लिकेशन, नई दिल्ली 1975.
6. शर्मा, रामकिशोर, दयानंद और भारतीय समाज सुधार आंदोलन, प्रथम संस्करण, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2010
7. अग्रवाल, महेश चंद्र, भारत में आर्य समाज का प्रभाव, प्रथम संस्करण, जयपुर, राजस्थान प्रकाशन मंडल, जयपुर, 2013
8. त्रिपाठी, हरिनारायण, महर्षि दयानंद के समाज सुधार कार्य, द्वितीय संस्करण, लखनऊ, साहित्य भवन प्रकाशन, 2011

****